क्या इलेक्ट्रॉनिक्स का महासागर है आपके भी जीवन की सच्चाई ?

इन दिनों हमारा जीवन इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ अत्यंत जटिलता से जुड़ा हुआ है । आज की बदलती हुई जीवनशैली के मुताबिक एक भी दिन सेल फोन, लैपटॉप, टैबलेट , टीवी और अब एल ई डी जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के संपर्क में आए बगैर गुजारना कल्पना से परे है । आज पूरी दुनिया के लोग मनोरंजन हेतु, परिवार एवं दोस्तों के साथ संपर्क बनाए रखने हेतु, स्कूल, कार्यस्थल एवं व्यवसाय समेत अन्य कई और कार्यों हेतु इन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग पर अधिकाधिक निर्भर हैं। हममें से कई इस बात से अनजान है ये सभी उपकरण इलेक्ट्रोमैग्नेटिक (EMR) विकिरण उत्सर्जित करते हैं।

आखिरकार इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन है क्या? क्या यह हमारे लिए नुकसानदायक है?

एक प्रकार से हम आज विविध प्रकार के चुंबकीय (EMF) क्षेत्रों के महासागर में रहते हैं। ये EMF भौतिक रूप से चार्ज किए गए ऑब्जेक्ट द्वारा उत्पादित भौतिक ऊर्जा क्षेत्र हैं जो EMR का उत्सर्जन करते हैं। EMR अंतरिक्ष के माध्यम से भ्रमण करने वाली ऊर्जा तरंगें हैं। EMR में रेडियो तरंगें, माइक्रोवेव, इनफ्रारेड, दृश्य प्रकाश, पराबैंगनी, एक्स-रे और गामा किरणें शामिल हैं। घर या कार्यस्थल के चारों ओर एक सरसरी नज़र दौड़ाएंगे तो पाएंगे कि दर्जनभर EMR उत्सर्जक उपकरण हमारे चारों ओर हैं। FM रेडियो, सेल फोन, टैबलेट, फिटनेस बैंड, माइक्रोवेव ओवन, वाई फाई और ब्लूटूथ डिवाइस, टीवी, इन्फ्रारेड तरंगों का उत्सर्जन करने वाले रिमोट कंट्रोल, ये सभी उपकरण मौजूदा हर समय हमारे आस पास रहते हैं । हम चाहे कितना भी इनका उपयोग सीमित करने का प्रयत्न करें, लेकिन इनके बिना अब हमारा काम भी नहीं चल सकता | EMR (इन्फ्रा-रेड वेव्स) का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण एवं के प्रयोजनों

के लिए भी आवश्यक है जैसे कि नाइट विजन गॉगल्स, मेडिकल डायग्नोस्टिकफ इंस्ट्रूमेंट्स और मशीनरी, मॉल, हवाई अड्डों पर सुरक्षा स्कैनिंग, राडार इत्यादि।

EMR के हानिकारक प्रभाव

लगातार उच्चस्तरीय EMR के संपर्क में रहना मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जब कोई विद्युतीय चुंबकीय क्षेत्र सुचालक पदार्थों पर प्रवाहित होता है तब वह

उनकी सतह पर बिजली के वितरण को प्रभावित करते हैं। जब कम आवृत्ति वाले विद्युतीय क्षेत्र मानवीय काया के मध्य से गुजरते हैं तो वे इसे ठीक उसी तरह प्रभावित करते हैं जैसे कि वे आवेशित किसी अन्य कण को प्रभावित करते हैं । **मानव शरीर में वे शरीर के विभिन्न अंगों के विद्युतीय चार्ज क्षेत्र को प्रभावित कर देते हैं जिसका परिणाम अहितकर होता है।**

मोबाइल फोन का उपयोग अब हमारे दैनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है । अतः मानव के स्वास्थ्य पर मोबाइल फोन द्वारा रेडिएशन का प्रभाव का अध्ययन एक अर्थपूर्ण विषय हो सकता है । मोबाइल के तेजी से बढ़ते उपयोग ने जनहित हेतु चिंता जताई है एवं इस से उत्सर्जित होने वाले EMF पर विवाद खड़ा हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कहा है जनहित हेतु मोबाइल स्टेशन द्वारा निकलने वाले इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन के संपर्क में रहने वाले लोगों पर पड़ने वाले इसके दुष्प्रभावों पर शोध करने की आवश्यकता है । शोध बताते हैं के जो लोग मोबाइल फोन टावर के नजदीक रहते हैं उनमें स्वास्थ्य खराब होने के कई असामान्य लक्षण मिले हैं साथ ही उनमें तनाव, अनिद्रा एवं सर दर्द की शिकायतें भी पाई गई हैं। डॉक्टर मार्टिन पॉल ने कई तथ्य इकट्ठा किए हैं और अपने 2016 के पेपर में इसे बताया है इसे आप इस लिंक पर जाकर पढ़ सकते हैं

इस हेतु समाधान की आवश्यकता

उन्नत तकनीक एवं टेक्नोलॉजी में हो रहे नित्य नए प्रयोगों को इस्तेमाल ना करना यह एक अव्यवहारिक सोच है। हमें एक ऐसे समाधान को ढूंढने की आवश्यकता है जिसके द्वारा अपने घर एवं कार्यस्थल में EMR के स्तर में कमी लाई जा सके बावजूद इसके कि हम इसका इस्तेमाल करते रहें या फिर इन उपकरणों के इस्तेमाल में कमी लाएं । **परंतु यह होगा कैसे ?**

परिकल्पना

वैदिक ग्रंथों में कहा गया है कि खतरनाक हानिकारक वायुमंडलीय तरंगों से मुक्ति पाने हेतु यज्ञ एक सशक्त गैर पारंपरिक समाधान है । यही परीक्षण करने हेतु दिल्ली एनसीआर में 5 केस स्टडी की गई ताकि यह जांच किया जा सके कि यज्ञ द्वारा भीतरी EMR पर इसका क्या प्रभाव पड़ा।

प्रयोग

प्रचलित यज्ञ सामग्री के साथ हवन किया गया एवं रेडिएशन की माप यज्ञ से पूर्व और यज्ञ के बाद अलग-अलग समय एवं विभिन्न दूरियों पर ली गई। डाटा को GM 3120 इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन डिटेक्टर द्वारा जांचा गया जो कि यह जांच करता है की इलेक्ट्रिक फील्ड एवं मैग्नेटिक फील्ड रेडिएशन कितनी है।

यज्ञ की प्रक्रिया *'सरल और सर्वोपयोगी गायत्री यज्ञ विधि'* पुस्तक में वर्णित विधि अनुसार की गई ।यज्ञ की प्रक्रिया पुस्तक में वर्णित षट्कर्म से शुरू होती है और विसर्जन के साथ समाप्त होती है । यज्ञ में उपयोग किए जाने वाले पदार्थ थे - समिधा एवं वायु प्रदूषण दूर करने वाली विशेष हवन सामग्री।

इस लेख के अंत में साझा किए गए जर्नल लिंक में समाग्री के बारे में विवरण दिया गया है, लेकिन एक संक्षिप्त विचार देने के लिए - संयंत्र और हर्बल अर्क की रेडियोप्रोटेक्टिव क्षमता के बारे में पहले कई अध्ययन किए गए हैं। (उल्लेखनीय - NCBI एवं DRDO)

नतीजे क्या दर्शातें हैं?

नतीजे बताते हैं की यज्ञ के माध्यम से भीतर में न केवल मध्यम से लंबी दूरी तक के क्षेत्र के ईएमआरएस के स्तर में भारी कमी आई वरन् कमी के इस स्तर को 24 घंटों का बरकरार पाया गया । भीतरी रेडिएशन स्रोतों से यज्ञ द्वारा कम दूरी वाले EMR में भी काफी कमी पाई गई।

अध्ययन में पाया गया यज्ञ कि बाद EMR में बदलाव न केवल छोटी दूरी और छोटी अवधि के लिए उल्लेखनीय थे अपितु लंबी दूरी और लंबी अवधि के लिए भी कारगर थे। अब यह कहा जा सकता है कि यज्ञ का घर के अंदर के वातावरण पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं यह इसकी तीव्रता को काफी कम कर देता है और उस स्तर तक पहुंचा देता है जो हमारे लिए सुरक्षित है।

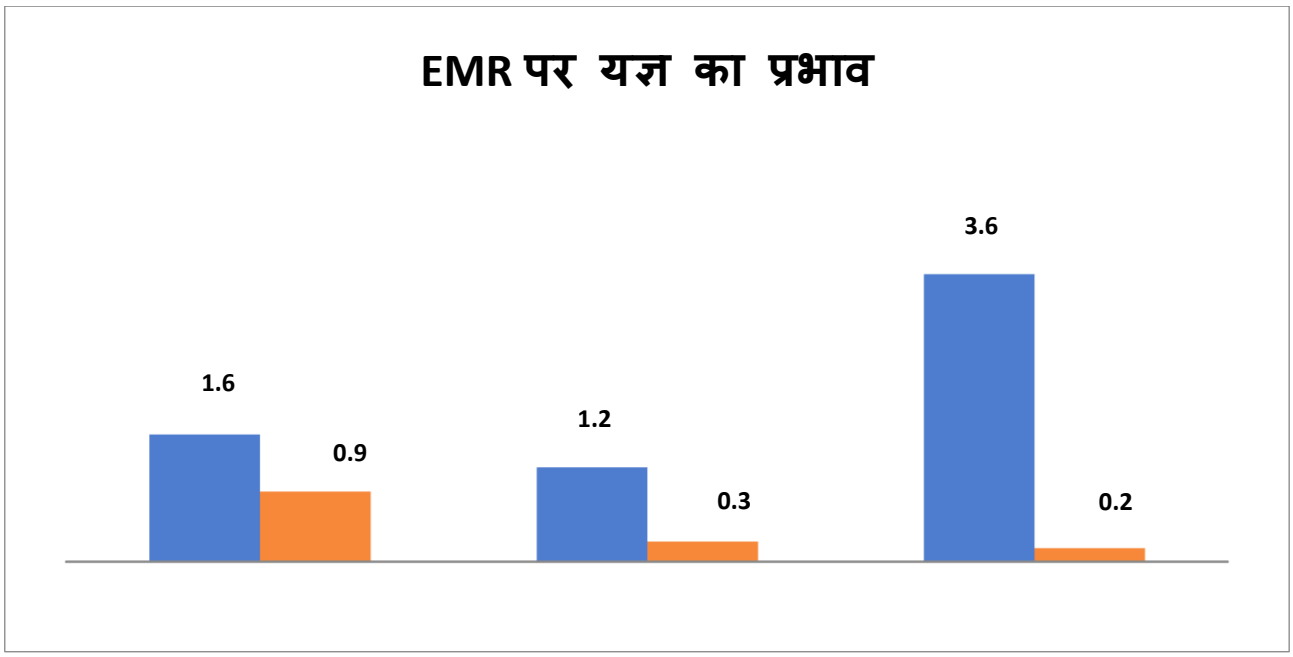

गौतम नगर, नई दिल्ली में किए गए अध्ययन में औसत EMR टेस्ला इकाई में

प्रयोग की पूरी जानकारी और संदर्भ के लिए यहां क्लिक करें

पत्रिका पे वापस जायें